

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 12 अध्याय 13: भागवत की महिमा

14 September 2026



जैसे महान् कथा समाप्त होती है, सूत गोस्वामी स्वयं श्रीमद्भागवतम् की महिमा की घोषणा करते हैं — समस्त उपनिषदों का सार, ऋषियों के माध्यम से भगवान् से उतरा दिव्य ज्ञान का देदीप्यमान दीप, युग की मलिनताओं को हरता हुआ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। अब हम सम्पूर्ण भागवत के अन्तिम अध्याय तक पहुँचते हैं। यहाँ, नैमिषारण्य के वन में, सूत गोस्वामी महान् कथा को उसके समापन की ओर ले जाते हैं। वे उन भगवान् को प्रणाम करते हुए आरम्भ करते हैं जिन्हें देवतागण भी सम्पूर्णतः नहीं जान पाते, फिर अठारह पुराणों में से प्रत्येक में निहित श्लोक-संख्या गिनाते हैं, और तत्पश्चात् इस बात की भव्य उद्घोषणा की ओर अग्रसर होते हैं कि यह शास्त्र अन्य समस्त ग्रन्थों से किस प्रकार विशिष्ट है। इसके आगे उनकी वाणी आत्मचिन्तनशील हो जाती है, यह दर्शाते हुए कि यह दिव्य ज्ञान सिद्ध आत्माओं की अनेक पीढ़ियों से होते हुए किस प्रकार इस वर्तमान कथन तक पहुँचा, और वे केवल यही प्रार्थना करते हुए समापन करते हैं कि प्रत्येक जन्म में भक्ति अचल बनी रहे। जो आगे आता है वह सारांश-मात्र नहीं अपितु एक सार्थक वापसी है — कथा उसी वन में लौट आती है जहाँ से उसका आरम्भ हुआ था, और श्रोता के हाथों में कुछ ऐसा सौंप जाती है जो अन्तिम शब्द के बहुत बाद तक साथ रहेगा।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 13 (त्रयोदश अध्याय — भागवत का अन्तिम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: पुराणों का विस्तार तथा भागवत की महिमा
- मुख्य वक्ता: सूत गोस्वामी (उग्रश्रवा), नैमिषारण्य के ऋषियों को कथा सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: नैमिषारण्य के ऋषिगण, शौनक के नेतृत्व में
- मुख्य विषय-वस्तु: अठारह पुराणों में श्लोकों की संख्या, श्रीमद्भागवतम् की परम महिमा, तथा गुरु-परम्परा पर ध्यान
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 13, श्लोक 1-23
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

प्रारम्भिक प्रणाम

सूत अन्तिम अध्याय का आरम्भ भगवान् की श्रद्धापूर्ण स्तुति से करते हैं — वह महिमामय भगवान् जिन्हें ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र तथा मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों से स्तुत करते हैं, जिन्हें सामवेद के गायक महिमा-मण्डित करते हैं, और जिन्हें योगी ध्यान में देखते हैं, फिर भी जिनका सम्पूर्ण सत्य न देव न दानव जान पाते हैं। वे भगवान् के कूर्म-रूप के श्वास-प्रश्वास पर एक आशीर्वचन देते हैं, जिनके सूक्ष्म स्पन्दन पर आज भी सागर ज्वार-भाटे में उठता-गिरता है, ताकि सबकी रक्षा हो।

अठारह पुराणों का विस्तार

तब सूत अठारह पुराणों में से प्रत्येक में समाहित श्लोकों की संख्या बताते हैं। ब्रह्म पुराण में दस सहस्र श्लोक हैं; पद्म में पचपन सहस्र; विष्णु में तेईस सहस्र; और इसी प्रकार शिव, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़ तथा ब्रह्माण्ड पुराणों में। समस्त पुराणों का सम्मिलित योग, वे कहते हैं, चार लाख श्लोक है; और इनमें से श्रीमद्भागवत अठारह सहस्र श्लोकों का माना जाता है।

भागवत की महिमा

अब सूत उस विषय तक उठते हैं जिससे सम्पूर्ण शास्त्र समाप्त होता है: भागवत की परम महिमा। यह सर्वप्रथम भगवान् द्वारा ब्रह्मा को कृपापूर्वक प्रकट किया गया, जो उनकी नाभि से उत्पन्न कमल पर विराजमान थे; यह आदि, मध्य तथा अन्त में वैराग्य की महिमा दर्शाने वाले आख्यानो से समृद्ध है; और इसका विषय एक अद्वितीय सत्ता है — ब्रह्म तथा आत्मा की एकता — जिसका प्रयोजन आत्मा का पदार्थ से वियोग है।

आदिमध्यावसानेषु वैराग्याख्यानसंयुतम् ।
हरिलीलाकथाव्रातामृतानन्दितसत्सुरम् ॥ ११ ॥
सर्ववेदान्तसारं यद ब्रह्मात्मैकत्वलक्षणम् ।
वस्त्वद्वितीयं तन्निष्ठं कैवल्यैकप्रयोजनम् ॥ १२ ॥

*ādi-madhyāvasāneṣu vairāgyākhyāna-saṁyutam hari-līlā-kathā-vrātā- mṛtānandita-sat-suram
sarva-vedānta-sāraṁ yad brahmātmaikatva-lakṣaṇam vastv advitīyaṁ tan-niṣṭhaṁ kaivalyaika-
prayojanam*

अर्थ: आदि से अन्त तक वैराग्य के आख्यानो से समृद्ध, भगवान् की लीला-कथाओं के अमृत से सन्तों तथा देवों को आनन्दित करता हुआ, यह समस्त वेदान्त का सार है, ब्रह्म तथा आत्मा की एकता से लक्षित; इसका विषय एक अद्वितीय सत्ता है, और इसका एकमात्र प्रयोजन मुक्ति है। (स्कन्ध 12, अध्याय 13, श्लोक 11-12)

सूत बताते हैं कि भाद्रपद मास की पूर्णिमा के पावन अवसर पर जो साधक भागवत की स्वर्ण-सिंहासन पर प्रतिष्ठित प्रति को श्रद्धापूर्वक दान करता है, उसे जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त होती है।

प्रौष्ठपद्यां पौर्णमास्यां हेमसिंहसमन्वितम् ।
ददाति यो भागवतं स याति परमां गतिम् ॥ १३ ॥

*prauṣṭhapadyām paurṇamāsyām hema-sirṁha-samanvitam dadāti yo bhāgavatam sa yāti
paramām gatim*

अर्थ: जो भाद्रपद की पूर्णिमा को स्वर्ण-सिंहासन पर रखे भागवत की एक प्रति का दान करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है। (स्कन्ध 12, अध्याय 13, श्लोक 13)



पावन भागवत स्वर्ण-सिंहासन पर प्रतिष्ठित — सूत घोषणा करते हैं कि भाद्रपद की पूर्णिमा को इस पुराण का पूजन तथा दान भक्त को परम गति तक ले जाता है (श्लोक 13)।

अन्य पुराण, सूत कहते हैं, साधु-सभा में अपनी आभा तभी तक बनाए रखते हैं जब तक स्वयं महान् भागवत वहाँ उपस्थित न हो जाए — इसके समक्ष आकर वे सहज ही फीके पड़ जाते हैं, क्योंकि यह शास्त्र अपने आप में एक अद्वितीय, अतुलनीय कोटि का है।

सर्ववेदान्तसारं हि श्रीभागवतमिष्यते ।

तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः क्वचित् ॥ १५ ॥

sarva-vedānta-sāraṁ hi śrī-bhāgavatam iṣyate tad-rasāmṛta-tṛptasya nānyatra syād ratiḥ kvacit

अर्थ: श्रीमद्भागवत समस्त वेदान्त का सार माना जाता है; जो इसके रस के अमृत से तृप्त है वह अन्यत्र कहीं आनन्द नहीं पाता। (स्कन्ध 12, अध्याय 13, श्लोक 15)

यह पुराणों में वही स्थान रखता है जो नदियों में गंगा, देवों में विष्णु, तथा तीर्थों में काशी। यह एक निर्दोष पुराण है, वैष्णवों को प्रिय, जिसमें एक परम सत्ता महिमा-मण्डित है; और जो इसे श्रद्धापूर्वक सुनता, ध्यानपूर्वक पढ़ता, तथा इस पर मनन करता है, वह मुक्त होने योग्य होता है।

श्रीमद्भागवतं पुराणममलं यद्वैष्णवानां प्रियं

यस्मिन् पारमहंस्यमेकममलं ज्ञानं परं गीयते ।

तत्र ज्ञानविरागभक्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतं

तच्छृण्वन् सुपठन् विचारणपरो भक्त्या विमुच्येन्नरः ॥ १८ ॥

*śrīmad-bhāgavatam purāṇam amalāṁ yad vaiṣṇavānām priyaṁ yasmin pāramahaṁsyam ekam
amalāṁ jñānaṁ param gīyate tatra jñāna-virāga-bhakti-sahitaṁ naiṣkarmyam āviskṛtaṁ tac
chṛṇvan su-paṭhan vicāraṇa-paro bhaktyā vimucyen naraḥ*

अर्थ: श्रीमद्भागवत वह निर्दोष पुराण है, वैष्णवों को प्रिय, जिसमें परमहंसों का वह एक शुद्ध परम ज्ञान गाया जाता है; वहाँ ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति सहित निष्कर्म्य अवस्था प्रकट है। जो इसे सुनता, भली भाँति पढ़ता, तथा भक्तिपूर्वक इस पर मनन करता है, वह मुक्ति पाता है। (स्कन्ध 12, अध्याय 13, श्लोक 18)

आगे बढ़ता ज्ञान का दीप

अब सूत वह ध्यान प्रस्तुत करते हैं जिससे भागवत अपने समापन तक आता है — कृपा की उस शृंखला का स्मरण जिसके माध्यम से यह ज्ञान-दीप उतरा है, सृष्टि के प्रारम्भ में भगवान् से ब्रह्मा तक, ब्रह्मा से नारद, नारद से व्यास, व्यास से शुक, तथा शुक से राजा परीक्षित तक।

कस्मै येन विभासितोऽयमतुलो ज्ञानप्रदीपः पुरा
तद्रूपेण च नारदाय मुनये कृष्णाय तद्रूपिणा ।
योगीन्द्राय तदात्मनाथ भगवद्राताय कारुण्यत-
स्तच्छुद्धं विमलं विशोकममृतं सत्यं परं धीमहि ॥ १९ ॥

*kasmai yena vibhāsito 'yam atulo jñāna-pradīpaḥ purā tad-rūpeṇa ca nāradāya munaye kṛṣṇāya
tad-rūpiṇā yogīndrāya tad-ātmanātha bhagavad-rātāya kārūṇyatas tac chuddhaṁ vimalaṁ
viśokam amṛtaṁ satyaṁ param dhīmahi*

अर्थ: हम उस शुद्ध, निर्मल, शोक-रहित, अमर तथा परम सत्य का ध्यान करते हैं — जिनके द्वारा यह अनुपम ज्ञान-दीप पूर्वकाल में ब्रह्मा को प्रकट हुआ, और ब्रह्मा द्वारा ऋषि नारद को, नारद द्वारा ऋषि कृष्ण (व्यास) को, उनके द्वारा महायोगी शुक को, तथा शुक द्वारा, करुणावश, भगवान् के कृपापात्र राजा परीक्षित को। (स्कन्ध 12, अध्याय 13, श्लोक 19)



दिव्य ज्ञान का दीप पावन परम्परा में उतरता हुआ — भगवान् से ब्रह्मा, नारद, व्यास, शुक, तथा राजा परीक्षित तक — वह जीवन्त शृंखला जिसके माध्यम से भागवत हम तक पहुँचा है (श्लोक 19)।

वे समस्त के साक्षी भगवान् वासुदेव को प्रणाम करते हैं, जिन्होंने यह पुराण सर्वप्रथम ब्रह्मा को सिखाया; वे ऋषि शुक को प्रणाम करते हैं, जिन्होंने परीक्षित को पुनर्जन्म के भय से उबारा; और प्रार्थना करते हैं कि प्रत्येक आगामी जन्म में उनके हृदय में भगवान् के चरणों की भक्ति अंकुरित हो। तब, सम्पूर्ण शास्त्र के अन्तिम वचनों के साथ, सूत श्रीहरि को प्रणाम करते हैं।

नामसङ्कीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम् ।

प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम् ॥ २३ ॥

nāma-saṅkīrtanaṁ yasya sarva-pāpa praṇāśanam praṇāmo duḥkha-sāmanas taṁ namāmi harim param

अर्थ: मैं उस परम भगवान् हरि को प्रणाम करता हूँ, जिनके नामों का उच्च कीर्तन समस्त पापों का नाश करता है, और जिन्हें श्रद्धापूर्ण प्रणाम समस्त दुःखों को शान्त कर देता है। (स्कन्ध 12, अध्याय 13, श्लोक 23)



सम्पूर्ण भागवत के अन्तिम वचनों के साथ, सूत श्रीहरि को प्रणाम करते हैं, जिनके नामों का उच्च कीर्तन समस्त पापों का नाश करता है और जिन्हें श्रद्धापूर्ण प्रणाम समस्त दुःखों को शान्त करता है (श्लोक 23)।

इस प्रणाम के साथ वह महान् एवं गौरवमय भागवत-पुराण — जिसे ऋषि वेदव्यास ने रचा और जो अठारह सहस्र श्लोकों का है — अपने अन्त तक पहुँचता है।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भागवत समस्त शास्त्र का सार है। जैसे नदियों में गंगा तथा तीर्थों में काशी, वैसे ही भागवत उपनिषदों का सार है; जो इसके अमृत से तृप्त हो जाता है वह अन्यत्र कहीं आनन्द नहीं ढूँढ़ता (श्लोक 15-17)।
2. इसका प्रयोजन भक्ति द्वारा मुक्ति है। यह निर्दोष पुराण वैराग्य तथा भक्ति सहित शुद्ध ज्ञान प्रकट करता है; इसे प्रेमपूर्वक सुनना, पढ़ना तथा इस पर मनन करना ही मुक्ति का मार्ग है (श्लोक 18)।
3. पावन ज्ञान कृपा की शृंखला से जीवित रहता है। ज्ञान-दीप भगवान् से ब्रह्मा, नारद, व्यास, शुक, परीक्षित तक उतरा — और आज हम तक केवल इसी अखण्ड करुणा-परम्परा के माध्यम से पहुँचता है (श्लोक 19)।
4. पवित्र नाम अन्तिम शरण है। शास्त्र किसी सिद्धान्त से नहीं, अपितु एक प्रणाम से समाप्त होता है — श्रीहरि को, जिनका नाम समस्त पापों का नाश करता है और जिनका स्मरण समस्त दुःखों को शान्त करता है (श्लोक 23)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

भागवत जिस प्रकार समाप्त होता है उसमें एक सुन्दर सन्तुलन है। यह इसी नैमिषारण्य वन में आरम्भ हुआ था, ऋषियों द्वारा सूत से कलियुग के अन्धकार में भगवान् की चर्चा करने की याचना से; और यहीं समाप्त भी होता है, सूत द्वारा जो कुछ उन्होंने पाया उसे इन ऋषियों के — तथा हमारे — हाथों में सौंपते हुए। अन्तिम अध्याय किसी नाटकीय चरम की चेष्टा नहीं करता। इसके बजाय, वह शान्त तथा कृतज्ञ हो जाता है, गुरुओं का स्मरण करता है: भगवान् जिन्होंने दीप जलाया, ब्रह्मा जिन्होंने उसे पाया, नारद, व्यास, शुक, परीक्षित। हम उस सूची में नवीनतम नाम

हैं। जब हम इस पुराण का एक श्लोक भी पढ़ते हैं, दीप एक बार फिर सौंपा जाता है। और देखिए शास्त्र अन्त में कहाँ विश्राम करना चुनता है — किसी दर्शन पर नहीं, चाहे वह कितना ही उदात्त हो, अपितु प्रेम के एक सरल कर्म पर: श्रीहरि को एक प्रणाम, जिनका नाम समस्त पापों को हरता तथा जिनका स्मरण समस्त दुःखों को शान्त करता है। बारह स्कन्धों तथा अठारह सहस्र श्लोकों के पश्चात्, अन्तिम शब्द भक्ति है। यही भागवत का विदाई-उपहार है: कि सर्वोच्च ज्ञान तथा विनम्रतम प्रेम, अन्ततः, एक ही हैं — और दोनों उस प्रत्येक जन के लिए उपलब्ध हैं जो केवल पवित्र नाम का जप करेगा तथा शीश झुकाएगा।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, जब हम यह अन्तिम अध्याय पूर्ण करते हैं, ज्ञान का दीप ग्रहण कीजिए और उसे आगे सौंपने का संकल्प कीजिए। कृतज्ञता से उस गुरु-शृंखला का स्मरण कीजिए जिसके माध्यम से भागवत आप तक पहुँचा है — भगवान् तथा पुरातन ऋषियों से लेकर उन तक जिन्होंने आपके अपने जीवन में आपको सिखाया। फिर शास्त्र के समापन-भाव को अपना बनाकर उसका सम्मान कीजिए: पवित्र नाम का ऊँचे स्वर से जप कीजिए, और श्रीहरि को एक हृदयस्पर्शी प्रणाम अर्पित कीजिए, “जिनके नामों का उच्च कीर्तन समस्त पापों का नाश करता है।” यदि सम्भव हो, भागवत का एक श्लोक या एक कथा किसी अन्य से साझा करने का संकल्प कीजिए, ताकि दीप आगे सौंपा जाए। अन्त में “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” का एक निश्चित संख्या में जप कीजिए, सूत के साथ प्रार्थना करते हुए कि प्रत्येक आगामी जन्म में भगवान् के चरणों की भक्ति आपके हृदय में अंकुरित हो।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का त्रयोदश अध्याय सम्पूर्ण श्रीमद्भागवतम् का समापन है। सूत गोस्वामी अठारह पुराणों का विस्तार बताते हैं, फिर भागवत की परम महिमा की घोषणा करते हैं — उपनिषदों का सार, पुराणों में वैसे ही अनुपम जैसे नदियों में गंगा, जिसका श्रद्धापूर्ण श्रवण, पठन तथा मनन मुक्ति तक ले जाता है। वे गुरु-परम्परा पर महान् ध्यान प्रस्तुत करते हैं, जिसके माध्यम से यह ज्ञान-दीप भगवान् से ब्रह्मा, नारद, व्यास, शुक तथा परीक्षित तक उतरा है, और सम्पूर्ण शास्त्र का समापन श्रीहरि को एक प्रणाम से करते हैं, जिनका नाम समस्त पापों का नाश करता तथा जिनका स्मरण समस्त दुःखों को शान्त करता है। इस प्रकार वह महान् एवं गौरवमय भागवत-पुराण, वेदव्यास द्वारा अठारह सहस्र श्लोकों में रचित, समाप्त होता है — अन्त में हमें नैमिषारण्य के वन में लौटा लाता, और हमारे हाथों में दिव्य ज्ञान का दीप छोड़ जाता है, अपने जीवन में ले जाने तथा अपने पश्चात् आने वालों को, बदले में, सौंपने हेतु।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, त्रयोदश अध्याय (अन्तिम अध्याय)।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-13-bhagavat-ki-mahima-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

